KHAN G.S. RESEARCH CENTRE
Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna-6
Mob. : 8877918018, 8757354880
By : Khan Sir
(मानचित्र विशेषज्ञ)

GEOGRAPHY- TARGET

☞ पृथ्वी की स्थलाकृति का अध्ययन **topography** कहलाता है।

⇒ **अपक्षय (Wathering)** – चट्टानों का टूटना।

⇒ **अपरदन (Erasion)**– वायु या जल द्वारा चट्टानों का बहना।

⇒ **निक्षेपण (Deposite)** – गाद (Silt) का जमा होना।

नदी की अवस्था

(1) युवा (पर्वत) (2) प्रौढ़ (मैदान) (3) वृद्ध (मुहाना निक्षेप)

↓

सर्वाजिक अपक्षय

Note :- नदियों को सर्वाधिक शक्ति दाल से मिलता है।

→ **क्षिप्रिका** – यह कटोरूनुमा उबड़-खाबड़ होता है।

→ **V आकार की घाटी :-** यह दो पर्वतों के बीच में होती है। जब यह गहरी होती है तो इसे गार्ज कहते है गार्ज गहरा होकर कैनियन या I आकार की घाटी बनाती है। उदाहरण- ग्राण्ड कैनियन USA (कोलोरोडी नदी)

→ **S-आकार की घाटी :-** यह मैदान में बनते है इसके किनारे पर जमा मिट्टी तटबन्ध कहलाता है।

→ **गोखुर झील**- जब S आकार की घाटी सीधा हो जाता हो तो उसे गोखुर झील कहते है।

→ **डेल्टा**- यह मुहाने पर जमा गाद द्वारा बनता है ग्रह सबसे उपजाऊ होती है सबसे बड़ा डेल्टा गंगा ब्रह्मपुत्र का **'सुन्दर वन डेल्टा'** है।

NOTE :- जब एक ओर पहाड़ हो तो डेल्टा तथा एस्चुरी दोनों बनते हैं दोनों ओर नदी के पहाड़ होने पर एस्चुरी बनाते हैं तथा पहाड़ नहीं हो तो नदी डेल्टा बनाती है।

→ **एस्चुरी (ज्वार नद)**- जब नदी के मुहाने पर पर्वत हो तो वह डेल्टा न बनाकर एस्चुरी बनाती है।

उदाहरण- नर्मदा, ताप्ति, गोदावरी।

NOTE - सबसे बड़ा एस्चुरी गोदावरी नदी का है। गोदावरी डेल्टा तथा एस्चुरी दोनों बनाती है। (दक्षिण भारत की गंगा 'गोदावरी' को कहते हैं।)

→ भारत में एक मात्र सरस्वती नदी है जो भूमिगत नहीं है।

भूमिगत जल द्वारा स्थलाकृति चूना पत्थर वाले प्रदेश में होती है। जिसे **कार्स्ट प्रदेश** कहते है। इनमें सर्वाधिक जल शोखने की क्षमता होती है।

→ **स्टेलेटाइट**- कंदरा के ऊपर की ओर लटकी स्थलाकृति। इसका निर्माण कम अपरदन के कारण होता है।

→ **स्टेलेमाइट**- जब अपरदन अधिक होता है तो नीचे की ओर चूनापत्थर जमाव हो जाता है।

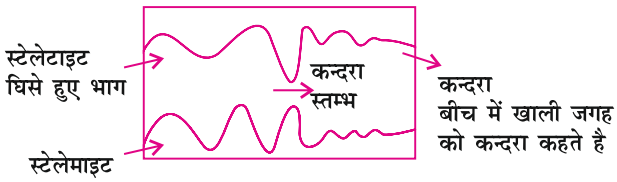

→ **'स्टेलेटाइट एवं स्टेलेमाइट'** दोनों जहां मिलते है उसे कन्दरा स्तंभ कहते हैं।

→ समुद्री जल की स्थलाकृति लहरे बनती है।

उदाहरण- समुद्री गुफा मेहराव, लैगून झील, दंतूरीत तट।

→ **बरखान:**- मरूस्थलीय क्षेत्र में अर्धचन्द्रकार बालू के टीले को बरखान कहते हैं।

→ **बालू का स्तुप :**- मरूस्थलीय क्षेत्र में बालू के चन्द्राकार टीले को बालू का स्तुप कहते हैं।

→ **लोयस का मैदान (अधिकांशत: मरूस्थली क्षेत्रों) :**- मरूस्थलीय क्षेत्र में बालू वायु द्वारा उड़ा ले जाती है और जिस स्थान पर उसे निक्षेपित करती है। उसे लोयस का मैदान कहते हैं। यह उपजाऊ होता है। सबसे बड़ा लोयस का मैदान 'चीन' में है।

→ **वालसन झील :**- यह मरूस्थल में पर्वत से घिरे होते हैं जब इसका जल सुख जाता है तो उसे 'प्लेया' कहा जाता है।

→ **फियोड तट :**- बर्फीले क्षेत्र में समुद्र के किनारे की खड़ी ढाल को फियोड तट कहते हैं।

→ **मोरेन :**- फियोड तट पर ऊपर के बर्फीले सतह को मोरेन कहते हैं।

→ **रासमुटान :**- जब बर्फ का निक्षेपण भेड़ के बाल के समान होता है तो उसे रासमुटान कहते हैं।

→ **रिया तट :**- नदी घाटियों के समुद्र में डूब जाने से रिया तट का निर्माण होता है। इसी कारण से इन तटों पर कहीं-कहीं गहरी और चौड़ी घाटियां तथा विशाल कगारें मिलते हैं।